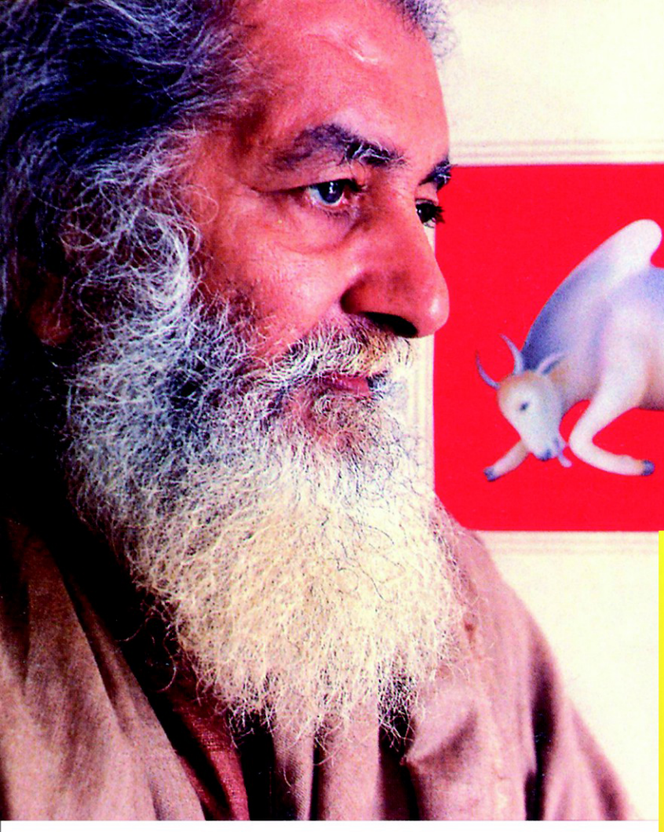

प्रयाग शुक्ल

मनजीत बाबा के चित्रों की गाएँ और बकरियाँ

गाएँ, बकरियाँ, गिलहरियाँ और चिड़ियाँ तो हम रोज़ ही कहीं न कहीं देखते हैं। कभी घर के सामने, कभी पड़ोस में, कभी ट्रेन या बस की खिड़की से। उन्हें देखकर अच्छा भी बहुत लगता है। और शेरों को हम भले ही चिड़ियाघरों या तस्वीरों में देखते हों, पर उनके रूप-रंग को भी हम पहचानते हैं। लेकिन इन्हीं को जब हम मनजीत बाबा के चित्रों में देखते हैं तो हमें एक और ही तरह का आनन्द आता है।

मनजीत का एक चित्र है जिसकी ज़मीन पूरी तरह लाल है। वह बिल्कुल समतल भी है। कहीं कोई गढ्ढे नहीं हैं उसमें। धूल का तो सवाल ही नहीं है। इसी ज़मीन पर खड़ी हुई है एक बकरी। हमारी ओर एकटक देखती। और जितनी लम्बी वह बकरी है, उतना ही लम्बा एक खजूर जैसा पेड़ है। उसमें फल भी लगे हैं। नीचे छह गिलहरियाँ हैं। इधर-उधर घूमतीं। पर, एक-दूसरे से दूर भी नहीं हैं। लगता है जैसे वे खाने के लिए कुछ ढूँढ रही हैं। गिलहरियाँ तो सचमुच की गिलहरियों जैसी ही हैं, लेकिन बकरी कुछ जामुनी, कुछ सफेद रंग की है। और उसके शरीर पर कहीं-कहीं वैसा लाल रंग है, जैसा कि चित्र की कुल ज़मीन का है। खजूर जैसा पेड़ खूब हरा है। एक बड़ा आनन्द तो इन रंगों को देखकर ही आता है। फिर हमारा ध्यान जाता है बकरी की आँखों पर, कि किस तरह वह चार टाँगों पर खड़ी हुई एकटक हमारी ओर देख रही है।

मनजीत के चित्रों की सतह या ज़मीन किसी आईने की तरह होती है। चकमक। ऊपर से नीचे तक अक्सर किसी एक ही रंग की। चिकनी। रंग सतह पर एक तरह की रोशनी होती है। हमें लुभाती। अपनी ओर बुलाती हुई। मनजीत के बनाए हुए एक और चित्र की ज़मीन गाढ़ी हरी है। किसी चिकने रंगीन कागज़ की तरह की। इसी पर गुलाबी, बैंगनी और सफेद रंग की एक गाय खड़ी है। उसका चेहरा सफेदी लिए हुए है – सोचता हुआ-सा चेहरा। मनजीत ने कुछ चित्रों में गायों के झुण्ड के झुण्ड भी बनाए हैं।

मनजीत बाबा का जन्म 1941 में पंजाब की धुरी नाम की जगह में एक गौशाला में ही हुआ था। इस बात को मनजीत अक्सर याद भी करते थे। उन्हें पशु-पक्षियों से बेहद लगाव था। नट-नटनियों के करतब भी मनजीत के चित्रों में दिखाई पड़ते हैं – वैसे ही करतब जैसे कोई नट तनी हुई रस्सी पर चलता है या किसी लाठी जैसी चीज़ के सहारे उछलता है। सिर के बल खड़ा हो जाता है। या फिर कोई और उछल कूद करता है। मनजीत ने बाँसुरी बजाते हुए कृष्ण के चित्र भी बनाए हैं। और हवा में उड़ते या छलाँग-सी लगाते स्त्री-पुरुषों के भी।

मनजीत ने कला की शिक्षा दिल्ली के ललित कला महाविद्यालय में पाई थी। फिर वह लन्दन चले गए। वहाँ रखकर भी उन्होंने कला के कई गुर सीखे। उनके एक कला-गुरु अवनी सेन भी थे, जिन्हें पशु-पक्षियों के चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता था। लन्दन से लौटने के बाद मनजीत ललित कला अकादमी के गढ़ी स्टूडियोज़ (दिल्ली) में काम करने लगे। यही चित्रकार जे. स्वामीनाथन का भी स्टूडियो था।

गढ़ी में काम करने वाले कलाकार रोज़ शाम को स्वामीनाथन के स्टूडियो में इकट्ठा होते। यहाँ कला पर चर्चा होती। और एक-दूसरे के काम पर भी बातें होती। इस चर्चा का लाभ मनजीत को भी हुआ। यहीं मनजीत की देखरेख में "सिल्क स्क्रीन प्रिंटिंग" की एक कार्यशाला हुई थी। इसमें एक ही चित्र के कई छापे तैयार किए जाते हैं। इस विधि में चित्र की छाप बिल्कुल समतल होती है। जिस कागज़ पर छाप ली जाती है, कोई खुरदुरापन नहीं रहता है। रंग चिकने रहते हैं।

मनजीत को लगा कि वे कैनवास पर भी क्यों न इसी तरह रंग लगाएँ। इससे चित्र की सतह चिकनी लगेगी और रंगों में जगमगाहट आ जाएगी। उन्हें पुराने "मिनिएचर चित्र" भी बेहद पसन्द थे। इन में भी रंग समतल-से होते हैं। हिमाचल प्रदेश की बसोहली शैली के मिनिएचर चित्रों से उन्हें खास लगाव था। बस, मनजीत ने इन सब को जोड़कर अपनी नई शैली बना ली। इसे हम मनजीत-शैली भी कह सकते हैं।

मनजीत के पशु-पक्षियों और स्त्री-पुरुषों की तस्वीरों को देखते हुए हमारा मन कई तरह की कल्पनाएँ करने लगता है। उनमें उड़ान की, छलाँग की बहुत-सी गतियाँ हैं। उनकी अपनी लय है।

मनजीत को गाने-बजाने का भी बहुत शौक था। वह ढोलक, हारमोनियम बजा लेते थे। और खुले गले से सूफी संगीत गाते थे। हँसना-हँसाना भी उन्हें खूब अच्छा लगता था। मनजीत मेरे दोस्तों में था। कभी-कभी हमारी रसोई में मज़ेदार बातों के साथ उनका मज़ेदार खाना पकाना बहुत याद आता है। एक बार हम कुछ दोस्त सुबह की सैर करने के बारे में बातें कर रहे थे। यही कि सुबह सैर करने में बहुत आनन्द आता है। इससे तबीयत भी अच्छी रहती है। नियम से रोज़ सुबह की सैर करनी चाहिए...। मनजीत हमारी बातें सुन रहे थे। हँसते हुए बोले, "कभी हाथी-ऊँट को नियम बनाकर सुबह की सैर करते हुए देखा है... आदमी को ही पता नहीं यह आदत कहाँ से लग गई है.... अरे, जब मन हो थोड़ा-सा टहल लो...।" उनकी बात सुनकर हम सब हँस पड़े।

वे अपने साथ हमेशा छोटी-छोटी बहियाँ रखते थे – स्केच करने के लिए। बातें करते-करते भी कुछ न कुछ बनाते रहते। कोई ढाई-तीन बरस पहले एक दिन उनकी तबीयत खराब हुई और वे "कोमा" में चले गए। अचेत हो गए। ढाई साल इसी तरह रहने के बाद अभी कुछ दिनों पहले, दिसम्बर 2008 के आखिरी हफ्ते में उनका देहान्त हो गया। उनके बनाए हुए चित्र हमें उनकी याद भी दिलाते रहेंगे, और न जाने कितने लोगों को "देखने का सुख" भी देते रहेंगे। चकमक